अध्याय 6

महाद्वीप और महासागर

आपने विश्व का मानचित्र देखा होगा। उसे एक बार पुनः देखिए और पता लगाइए कि पृथ्वी पर जल भाग अधिक है या स्थल भाग अधिक है? पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भाग पर महासागर और 29 प्रतिशत भाग पर महाद्वीपों का विस्तार है। इन्हें प्रथम श्रेणी के भू–आकार कहा जाता है। समस्त जलीय भाग को चार भागों में विभाजित किया गया है जिन्हें हम महासागर कहते हैं एवं समस्त स्थलीय भाग को सात भागों में विभाजित किया गया है जिन्हें हम महाद्वीप कहते हैं। आइए इस अध्याय में हम इन सभी महाद्वीपों एवं महासागरों की सामान्य विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

विश्व के महाद्वीप और महासागर

एशिया

मानचित्र को देखकर पता लगाइए कि क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा महाद्वीप कौनसा है? एशिया विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह पृथ्वी के समस्त स्थलीय भाग के लगभग 30 प्रतिशत भू–भाग पर फैला हुआ है। इस महाद्वीप में विश्व की लगभग दो–तिहाई जनसंख्या रहती है। एशिया अफ्रीका से स्वेज नहर और लाल सागर द्वारा अलग होता है। पूर्व में यह प्रशान्त महासागर से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में आर्कटिक महासागर और दक्षिण में हिन्द महासागर स्थित है। यूराल पर्वत एशिया और यूरोप को अलग करता है। सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित हैं केवल कुछ द्वीप समूह दक्षिण गोलार्द्ध में हैं। विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला हिमालय श्रेणी इस महाद्वीप में है जिसका सर्वोच्च पर्वत शिखर माउन्ट एवरेस्ट है, जो 8848 मीटर ऊँचा है। यह शिखर नेपाल–चीन सीमा

तिब्बत के पठार के एक दृश्य

पर है। विश्व का सबसे नीचा स्थान मृत सागर है जो समुद्र तल से 418 मीटर नीचा है। यह स्थान जॉर्डन–इज़राइल सीमा पर स्थित है। तिब्बत का पठार एशिया महाद्वीप में ही है, जो विश्व का सबसे बड़ा पठार है। अधिक ऊँचा होने के कारण यह एक बर्फीला पठार है। चीन में बहने वाली यांग्टीसी नदी एशिया की सबसे लंबी नदी है। अपनी विविध और विशाल प्राकृतिक विशेषताओं के कारण यहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार की जलवायु और वनस्पति पाई जाती है। यह महाद्वीप उत्तर में अत्यधिक ठण्डा है तो मध्यवर्ती और दक्षिण–पश्चिमी भाग में गर्म और शुष्क तथा दक्षिणी में गर्म और आर्द्र जलवायु है।

क्या आप जानते हैं?

विश्व की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या अकेले एशिया महाद्वीप में पाई जाती है। इस महाद्वीप में जनसंख्या का सर्वाधिक संकेंद्रण दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्वी भाग में है।

आओ करके देखें :

विश्व के राजनीतिक मानचित्र को देखिए तथा एशिया के दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित अधिक जनसंख्या वाले प्रमुख देशों की पहचान कर उनके नाम लिखिए।

अफ्रीका–

क्षेत्रफल एवं जनसंख्या दोनों के आधार पर एशिया के बाद अफ्रीका महाद्वीप विश्व का दूसरा बड़ा महाद्वीप है। यह कुल स्थलीय भाग के लगभग 20 प्रतिशत भाग पर फैला हुआ है। भूमध्य रेखा, कर्क रेखा एवं मकर रेखा तीनों इस महाद्वीप से होकर गुजरती हैं, इसलिए इस महाद्वीप का अधिकांश भाग उष्ण जलवायु में आता है। इस महाद्वीप को यूरोप से भूमध्य सागर और एशिया से लाल सागर अलग करता है। हिन्द महासागर इसके पूर्व की ओर तथा अटलांटिक महासागर पश्चिम में स्थित है। विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा उत्तरी अफ्रीका में विस्तृत है जबकि नामिब और कालाहारी मरुस्थल इसके दक्षिणी हिस्से में स्थित हैं। अफ्रीका में बहकर भूमध्य सागर में गिरने वाली विश्व की सबसे लम्बी नदी नील है। कांगों नदी अटलांटिक महासागर में गिरती है। कांगो बेसिन में विश्व का दूसरा बड़ा वर्षा वनों वाला क्षेत्र है। इन वर्षा वनों के निकट भूमध्य रेखा के आस–पास

विक्टोरिया झील

लम्बी घास के क्षेत्र सवाना पाए जाते हैं। जहाँ दो सिंग वाला गेंडा, जेबरा, हिरण, अफ्रीकी शेर और हाथी आदि बड़े जीव मिलते हैं। एटलस पर्वत श्रेणी मोरक्को से ट्यूनिशिया तक यहाँ की सबसे लम्बी पर्वत श्रृंखला है। तंजानिया में किलीमन्जारो पर्वत और केन्या में केन्या पर्वत प्रमुख ज्वालामुखी क्षेत्र हैं। किलीमन्जारो ही अफ्रीका महाद्वीप का सबसे ऊँचा स्थान है। लावा निर्मित मिट्टी के उपजाऊ क्षेत्र यहाँ पाए जाते हैं। अफ्रीका की सबसे बड़ी झील विक्टोरिया है जो विश्व की ताजे पानी वाली दूसरी बड़ी झील है।

आओ करके देखें :

अपने शिक्षक की सहायता से एशिया और अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाने वाले विभिन्न जीवों की सूची बनाइए।

उत्तरी अमेरिका–

यह क्षेत्रफल के अनुसार तीसरा बड़ा महाद्वीप है। इसके उत्तर में आर्कटिक महासागर, दक्षिण में मेक्सिको की खाड़ी, पूर्व में अटलांटिक महासागर एवं पश्चिम में प्रशान्त महासागर है। कनाड़ा, संयुक्त राज्य अमेरिका और मेक्सिको इसके प्रमुख देश हैं जो अधिकांश भाग पर फैले हुए हैं। न्यू फाउण्डलैण्ड, वैन्कुवर, वेस्ट इण्डीज आदि द्वीपीय समूह और ग्रीनलैण्ड इस महाद्वीप के अंग हैं। अंग्रेजी, फ्रेन्च और स्पेनिश भाषा अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती हैं। इस महाद्वीप के उत्तरी भाग में अति शीत और दक्षिणी भाग में अति उष्ण जलवायु पाई जाती है।

ग्रांड कैनियन

इसके पश्चिमी तटीय क्षेत्र में रॉकी पर्वत एवं कई अन्य श्रेणीयाँ स्थित हैं। यहाँ अलास्का पर्वत श्रेणी में माउन्ट देनाली सबसे ऊँचा पर्वत शिखर है। इसके उत्तर–पूर्व में स्थित अप्लेशियन पर्वत सबसे पुराना पर्वत है। केलिफोर्निया की मृत घाटी सबसे नीचा क्षेत्र है। कनाड़ा और संयुक्त राज्य अमेरिका में विस्तृत उपजाऊ मैदान हैं। मिसीसिपी, मिसौरी, ओहियो यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। कोलोरेडो नदी पर स्थित विश्व का सबसे गहरा और बड़ा गर्त 'ग्राण्ड कैनियन' एक खास पहचान रखता है। विश्व की सबसे बडी ताजे पानी की सुपीरियर झील संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा के बीच स्थित है। उत्तरी अमेरिका में प्रसिद्व पाँच झीलों–सुपीरियर, मिशीगन, हयूरन, ईरी और ओन्टेरियो को 'महान झील क्षेत्र' कहा जाता है। इन झीलों के आसपास संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा में अधिक विकास हुआ है।

दक्षिण अमेरिका

दक्षिण अमेरिका का अधिकांश भाग दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। इसके उत्तर में कैरेबियन सागर, पश्चिम में प्रशान्त महासागर और पूर्व में अटलांटिक महासागर है। यह विश्व का चौथा बड़ा महाद्वीप है। ब्राज़ील इस महाद्वीप का सबसे बड़ा देश है जो महाद्वीप के आधे से अधिक भाग पर फैला हुआ है। महाद्वीपों पर स्थित विश्व की सबसे लम्बी पर्वत श्रृंखला एण्डीज इसके पश्चिमी भाग में स्थित है। एण्डीज पर्वत में एकांकागुआ चोटी इस महाद्वीप की सबसे ऊँची चोटी है। यहाँ कई सक्रिय ज्वालामुखी हैं। विश्व का सबसे ऊँचा जलप्रपात एंजेल, वेनेजुएला में स्थित है। अपवाह क्षेत्र की दृष्टि से विश्व की सबसे बड़ी नदी अमेज़न है जो अधिकांशतः ब्राजील देश में बहती है। विश्व का सबसे शुष्क क्षेत्र चिली में स्थित अटाकामा मरुस्थल को माना जाता है। इस महाद्वीप का उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन क्षेत्र अमेजन कई प्रकार की जैव विविधता वाला क्षेत्र है। अमेजन नदी के आसपास स्थित वर्षा वन विश्व का सबसे बडा वन क्षेत्र है जिसे 'धरती के फेफड़े' भी कहा जाता है। ब्राजील में विश्व की सर्वाधिक कॉफी का उत्पादन होता है। कॉफी के बागानों को यहाँ 'फेजेण्डा' कहा जाता है।

कॉफी के बागान

अण्टार्कटिका

अण्टार्कटिका महाद्वीप दक्षिणी ध्रूव के चारों ओर स्थित है इसलिए यह हमेशा बर्फ की मोटी परत से ढका रहता है। यह सबसे ठंडा महाद्वीप है, अतः इस पर स्थायी रूप से मानव नहीं रहते हैं, केवल कुछ वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए यहाँ जाते हैं। सन् 1960 में इस महाद्वीप पर जाने वाले प्रथम भारतीय व्यक्ति डॉ. गिरिराज सिंह सिरोही थे। इनके नाम पर ही यहाँ के एक स्थान का नाम 'सिरोही पॉइंट' रखा है। यहाँ पर कई देशों के शोध केन्द्र स्थित हैं। भारत ने भी मैत्री नामक स्थान पर एक शोध केंद्र स्थापित किया है।

अंटार्कटिका पर भारतीय शोध केंद्र

क्या आप जानते हैं?

अण्टार्कटिका की खोज केप्टन जेम्स कुक ने सन् 1773 में की, जबकि सन् 1821 में इस पर पहला कदम जॉन डेविस ने रखा।

यूरोप

यूरोप विश्व का दूसरा सबसे छोटा महाद्वीप है। वास्तव में यूरोप और एशिया एक ही भू–भाग हैं, जिसे यूरेशिया भी कहा जाता है। यूरोप के उत्तर में आर्कटिक महासागर, दक्षिण में भूमध्य सागर, पूर्व में एशिया महाद्वीप तथा पश्चिम में अटलांटिक महासागर स्थित हैं। यह यूराल पर्वत और केस्पियन सागर के द्वारा पूर्व में एशिया महाद्वीप से अलग किया गया है। काकेशस पर्वत और काला सागर इसके दक्षिण–पूर्वी भाग मे हैं। यह महाद्वीप अपने आप में ही एक प्रायद्वीप है। इसके उत्तर–पश्चिम में स्केन्डेनेविया उच्च भूमि और उत्तर–पूर्व में आर्कटिक महासागर के विस्तृत टुण्ड्रा प्रदेश हैं। दक्षिणी भाग में यूरोप के विशाल उत्तरी मैदान, सघन जनसंख्या और उच्च औद्योगीकरण के क्षेत्र हैं। जनसंख्या के अनुसार यह तीसरा बडा महाद्वीप है। वोल्गा यहाँ की सबसे लंबी नदी है जो केस्पियन सागर में गिरती है। इसके अतिरिक्त डेन्यूब, राइन, सीन, निस्टर आदि भी मुख्य नदियाँ हैं। विश्व का सबसे छोटा देश वेटिकन सिटी भी इसी महाद्वीप में स्थित है। यहाँ की जलवायु सम शीतोष्ण प्रकार की है। इस महाद्वीप में लगभग सभी देश विकसित हैं। यूरोप के दक्षिणी भाग में भूमध्यसागरीय जलवायु पाई जाती है, जहाँ अंगूर एवं नीबू वर्गीय खट्टे फलों की कृषि अधिक की जाती है।

यूरोप में अंगूर की कृषि

आओ करके देखें :

विश्व के रूपरेखा मानचित्र में भूमध्य सागर, केस्पियन सागर एवं यूराल पर्वत को दर्शाइए।

आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, तस्मानिया और निकटवर्ती द्वीप समूहों को मिलाकर इसे ऑशेनिया भी कहा जाता है। यह विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है। यह पूर्णतः दक्षिण गोलार्द्ध में स्थित है जो चारों तरफ से जल से घिरा हुआ है। इसके पूर्वी भाग में महाद्वीप का सबसे लबां पर्वत 'ग्रेट डिवाइडिंग रेन्ज' है। विश्व की सबसे

मेरीनो भेड

लंबी मूंगा (Coral) निर्मित दीवार 'ग्रेट बैरियर रीफ' इसके पूर्वी तट के पास प्रशान्त महासागर में स्थित है। आस्ट्रेलिया के मध्यवर्ती निचले भागों में भेड़ों और मवेशियों को पाला जाता है। कंगारू यहाँ का सबसे प्रसिद्ध जीव है। आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड में ऊन के लिए विश्व प्रसिद्ध 'मेरीनो' भेड़ पाली जाती है। आस्ट्रेलिया के पश्चिमी भाग पर विश्व का तीसरा बड़ा गर्म मरूस्थल (सहारा एवं अरब मरूस्थल के बाद) स्थित है। दक्षिणी–मध्य आस्ट्रेलिया में कालगुर्ली एवं कुलगार्डी नामक दो सोने की विश्व प्रसिद्ध खाने हैं। मर्रे–डार्लिंग यहाँ की दो प्रमुख नदियाँ हैं।

आओ करके देखें :

1. विश्व के मानचित्र को देखकर आस्ट्रेलिया के उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम में स्थित सागरों/महासागरों की पहचान कीजिए।
2. विश्व के रूपरेखा मानचित्र में विभिन्न महाद्वीपों को दर्शाइए।

महासागर

पृथ्वी के स्थल भाग के बाद आइए अब हम जलीय भाग का अध्ययन करते हैं। संपूर्ण जल भाग को चार महासागरों में विभाजित किया गया हैं–प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर, हिन्द महासागर और आर्कटिक महासागर। सभी सागर तथा खाड़ियाँ इन चारों महासागरों के ही अंग हैं।

प्रशान्त महासागर

यह सबसे बड़ा महासागर है जो विश्व के कुल क्षेत्रफल के लगभग एक तिहाई भाग पर फैला हुआ है। विश्व का लगभग आधे से अधिक जल इसी महासागर में स्थित है। यह इतना विशाल है कि सातों महाद्वीपों से भी इसका क्षेत्रफल अधिक है। इसकी आकृति त्रिभुज के समान है। यह महासागर एशिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अण्टार्कटिका और आस्ट्रेलिया महाद्वीपों से घिरा हुआ है। इसके चारों ओर आस्ट्रेलिया, एशिया महाद्वीपों के कई द्वीप पाए जाते हैं। जिनमें जापान, फिलीपींस, न्यूजीलैण्ड आदि महत्वपूर्ण हैं। इस महासागर में कई स्थानों पर कटक और गर्त पाए जाते हैं। यहाँ फिलीपींस के पास मेरियाना गर्त है पृथ्वी पर सबसे गहरा गर्त है। इसकी गहराई लगभग 11 किलोमीटर है। विश्व के 60 प्रतिशत से अधिक भूकंप एवं ज्वालामुखी इस महासागर के तटीय भागों में आते हैं इसलिए इसके तटीय भाग को 'अग्नि मेखला' (Fire Ring) कहा जाता है।

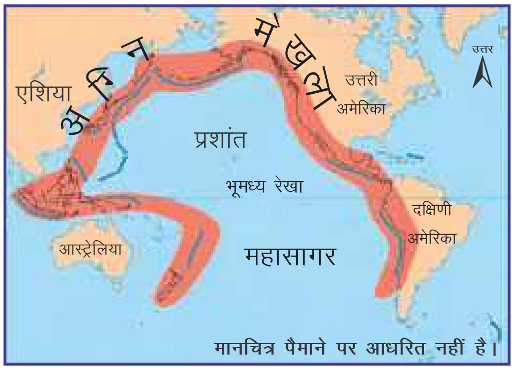

प्रशांत महासागर में अग्नि मेखला

अटलांटिक महासागर

प्रशान्त महासागर के बाद यह आकार की दृष्टि से पृथ्वी पर दूसरा बड़ा महासागर है। इसकी आकृति अंग्रेजी के 'S' अक्षर के समान है। पश्चिम में यह उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका से तथा पूर्व में यूरोप एवं अफ्रीका से घिरा हुआ है। इस महासागर के उत्तरी भाग में डागर बैंक और ग्राण्ड बैंक प्रमुख मछली पकड़ने के केन्द्र हैं।

इस महासागर के मध्य में एक जलमग्न पर्वत तंत्र स्थित है जिसे मध्य अटलांटिक कटक कहा जाता है। इस कटक श्रृखंला की पर्वत श्रेणियों के शिखर द्वीपों के रूप में जल से बाहर की ओर निकले हुए हैं। दो विकसित महाद्वीपों (यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका) के मध्य यह महासागर व्यापारिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। यहीं कारण है कि उत्तरी अटलांटिक महासागर को विश्व का सबसे व्यस्त समुद्री जल मार्ग है।

आओ करके देखें :

विश्व के रूपरेखा मानचित्र में अटलांटिक महासागर के पूर्व एवं पश्चिम में स्थित महाद्वीपों को दर्शाइए।

हिन्द महासागर

महासागर में स्थित एक सुन्दर द्वीप

यह महासागर पश्चिम में अफ्रीका, उत्तर में एशिया, पूर्व में आस्ट्रेलिया और दक्षिण में अण्टार्कटिका महाद्वीपों से घिरा हुआ है। आकार की दृष्टि से यह विश्व का तीसरा बड़ा महासागर है। इस महासागर का नाम उत्तर में स्थित हमारे देश हिन्दुस्तान (भारत का एक अन्य नाम) के नाम से हिन्द महासागर पड़ा है। यह पूर्व में प्रशान्त महासागर और पश्चिम में अटलांटिक महासागर से जुड़ा हुआ है। हमारे देश के पश्चिम में स्थित अरब सागर और पूर्व में स्थित बंगाल की खाड़ी हिन्द महासागर के ही भाग हैं। इस महासागर में अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, मॉरिशस, मेडागास्कर, श्रीलंका आदि प्रमुख द्वीप हैं।

आर्कटिक महासागर

विश्व का सबसे छोटा महासागर है, जो उत्तरी ध्रुव के चारों और फैला हुआ है। यह एकमात्र ऐसा महासागर है जो बर्फीला है। यह बेरिंग जलसंधि द्वारा प्रशान्त महासागर एवं डेनमार्क जलसंधि द्वारा अटलांटिक महासागर से जुड़ा है। स्थलीय सीमा यूरेशिया, उत्तरी अमेरिका एवं ग्रीनलैंड से मिलती है।

आओ करके देखें :

विश्व के रूपरेखा मानचित्र में महासागरों एवं उनमें स्थित प्रमुख सागरों, खाड़ियों एवं द्वीपों को दर्शाइए।

शब्दावली (Glossary)

मूंगा	–	एक प्रकार का समुद्री जीव।
बर्फीला	–	बर्फ से ढका हुआ।
जलसंधि	–	दो बड़े जल क्षेत्रों को जोडने वाला संकड़ा जल क्षेत्र।
कैनियन	–	नदी द्वारा शुष्क क्षेत्रों में निर्मित तेज ढाल वाली घाटी।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए–

(i) विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप कौनसा है–

(क) अफ्रीका (ख) उत्तरी अमेरिका

(ग) एशिया (घ) यूरोप ( )

(ii) सबसे गहरा गर्त किस महासागर में है–

(क) प्रशान्त महासागर (ख) अटलांटिक महासागर

(ग) आर्कटिक महासागर (घ) हिन्द महासागर ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

अ. ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप को...................... भी कहा जाता है।

ब. यूरोप और एशिया महाद्वीप का संयुक्त नाम...........................है।

स. अंग्रेजी के 'S' अक्षर के समान................महासागर है।

द. उत्तरी ध्रुव पर.................. महासागर स्थित है।

3. फेजेण्डा किसे कहते हैं?

4. व्यापार की दृष्टि से सबसे अधिक व्यस्त महासागर कौनसा है और क्यों?

5. 'महान झील क्षेत्र' किस महाद्वीप में स्थित है? इसकी प्रमुख झीलों के नाम लिखिए।

6. किस महाद्वीप का अधिकांश भाग उष्ण कटिबंधीय जलवायु में आता है? कारण बताइए।

7. एशिया महाद्वीप में पाई जाने वाली किन्हीं चार विशेषताओं को लिखिए।

8. विश्व में कितने महासागर हैं? इनका संक्षिप्त में परिचय दीजिए।

अध्याय 7

पर्यावरणीय प्रदेश

हमने अध्याय दो में पृथ्वी के प्रमुख परिमंडलों–स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल तथा जैवमंडल के विषय में पढ़ा है। हमने यह भी जाना कि ये घटक पृथ्वी को दूसरे ग्रहों से अलग एक अनूठा ग्रह बनाते हैं। ये पृथ्वी के विविध पर्यावरण को अपने में समेटे हुए हैं। इस अध्याय में हम पृथ्वी के प्रमुख कटिबंधों एवं पर्यावरणीय प्रदेशों की विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

पृथ्वी के मुख्य कटिबंध

हमने पिछले विभिन्न अध्यायों में पढ़ा है कि सूर्य की किरणें पृथ्वी के विभिन्न भागों में जलवायु को प्रभावित करती है। ये प्रभाव मूलतः पृथ्वी के आकार के कारण हैं। पृथ्वी गोलाकार है और ध्रुवों पर चपटी तथा भूमध्य रेखा पर इसका उभार है। सूर्य की किरणें यहाँ सीधी पड़ती हैं, अतएव इसके आसपास के स्थान गर्म रहते हैं। वही ध्रुवों पर सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं, इसलिए वहाँ ठण्ड अधिक पड़ती है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भूमध्य रेखा से ध्रुवों की तरफ तापमान घटता रहता है, जिसे हम ताप कटिबंधों में विभक्त कर सकते हैं। यह विभाजन अत्यंत सरल है और मोटे तौर पर हमें पृथ्वी के विविध पर्यावरणों को समझने में सहायता करता है। पृथ्वी को कटिबंधों में बाँटने का मतलब यह नहीं है कि एक कटिबंध से दूसरे कटिबंध के मध्य जलवायु और पर्यावरण एकदम से बदल जाता है। बदलाव होता है, पर धीरे–धीरे। एक कटिबंध के भीतर भी जलवायु, वनस्पति और जीवन में विभिन्नताएँ होती हैं।

पृथ्वी पर पाए जाने वाले विभिन्न ताप कटिबन्धों की विशेषताओं के कारण पृथ्वी पर कई प्रकार के पर्यावरणीय प्रदेश पाए जाते हैं। हमें पता है कि हमारी धरती सर्वत्र एक–जैसी नहीं हैं। कहीं ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, पठार हैं तो कहीं समतल मैदान। कहीं कल–कल करती नदियाँ है तो कहीं सूखा रेगिस्तान। कुछ स्थानों पर वर्षा अधिक होती है तो कुछ स्थानों पर अत्यंत कम होती है। कहीं बहुत गर्मी पड़ती है तो वहाँ हल्के कपड़े पहनने पड़ते हैं, तो कहीं इतनी ठण्ड की हम सामान्य कपड़ों में तो रह ही नहीं सकते हैं। ऐसे क्षेत्रों में ऊनी कपड़ों की आवश्यकता होती है। अर्थात हम पृथ्वी के जिस भू–भाग पर रहते हैं, वह इन विविध पर्यावरणों का बस एक छोटा-सा हिस्सा है। इन प्रदेशों में जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों तथा अन्य कई तरह की विविधताएँ मिलती हैं। इस अध्याय में हम विश्व में पाए जाने वाले विभिन्न पर्यावरणीय प्रदेशों का अध्ययन करेंगे।

पर्यावरण का अर्थ

हम हमारे चारों ओर एक बहुरंगी संसार देखते हैं। हमारे घर, स्कूल, सड़क, गाँव और हमारे शहर; छोटे–छोटे पौधों से बड़े–बड़े पेड़ों तक, विभिन्न प्रकार के जीव–जंतु, रंग–बिरंगे पक्षी, ऊँचे–ऊँचे पर्वत, रेगिस्तान, जल स्रोत, लहलहाते खेत और कल–कारखाने। अतः हमें प्राकृतिक एवं मानवीय पर्यावरण ने चारों ओर से घेर रखा है। हम सब इस पर्यावरण के साथ समन्वय बना कर जीते हैं। ये विभिन्न तत्व जिन्होंने मिलकर हमें घेर रखा हैं, हमारा पर्यावरण बनाते हैं।

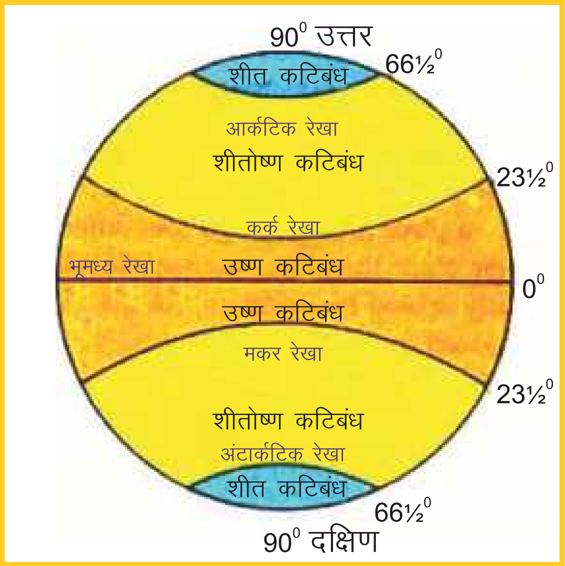

विश्व के प्रमुख कटिबंध

तापमान के आधार पर पृथ्वी के कटिबंध	अक्षांशीय स्थिति और विस्तार	प्रमुख विशेषताएँ
(अ) उष्ण कटिबंध (निम्न अक्षांशों में)	0° से 23½° उत्तर और दक्षिण अक्षांश (भूमध्य रेखा से कर्क रेखा तक उत्तरी गोलार्द्ध में और भूमध्य रेखा से मकर रेखा तक दक्षिणी गोलार्द्ध में)	• यहाँ जलवायु वर्ष भर गर्म और आर्द्र रहती है। • सूर्य की किरणें वर्ष में कम से कम एक बार लम्बवत पड़ती है। • मौसम में ज्यादा परिवर्तन नहीं होता– गर्मी और सर्दी एक जैसा ही रहता है • यहाँ भारत, श्रीलंका एवं ब्राजील प्रमुख देश हैं।
(ब) शीतोष्ण कटिबंध (मध्य अक्षांशों में)	23½° से 66½° उत्तर और दक्षिण अक्षांश (कर्क रेखा से आर्कटिक रेखा तक और मकर रेखा से अंटार्कटिक रेखा तक)	• जलवायु सुहावनी रहती है। • सूर्य कभी सिर पर नहीं रहता । • यहाँ ऋतुएँ होती है– बंसत, गर्मी, पतझड़ और सर्दी। • उत्तरी गोलार्द्ध में यहाँ ब्रिटेन और दक्षिणी गोलार्द्ध में न्यूजीलैंड प्रमुख देश हैं।
(स) शीत कटिबंध (उच्च अक्षांशों में)	66½° से 90° उत्तर और दक्षिण अक्षांश (आर्कटिक रेखा से उत्तरी ध्रुव तक और अंटार्कटिक रेखा से दक्षिणी ध्रुव तक)	• यहाँ सबसे ठण्डे प्रदेश हैं। यह स्थान अधिकाशत : बर्फ से ढ़के रहते हैं। यहाँ 6 महीने दिन और 6 महीने रात रहती है। इसलिए यहाँ बहुत कम लोग बसते हैं। • उत्तर में यहाँ आर्कटिक प्रदेश है तथा दक्षिण में अंटार्कटिका। प्रमुख देश कनाड़ा, स्वीडन, फिनलैंड और नॉर्वे हैं।

क्या आप जानते हैं?

विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों ने हमें धरती को अलग–अलग पर्यावरणीय प्रदेशों में बाँटने में सहायता की है। हर स्थान के कुछ विशिष्ट लक्षण हैं, जो उस स्थान को दूसरे स्थानों की तुलना में अलग और खास बनाता है– इसे ही प्रदेश कहते हैं।

पर्यावरणीय प्रदेश

हम इस विशाल पृथ्वी को कुछ समानताओं के आधार पर पर्यावरण प्रदेशों में बाँट सकते हैं। समान पर्यावरणीय परिस्थितियों और कारक जैसे जलवायु, मिट्टी, वनस्पति के सम्मिलित स्वरूप से प्राकृतिक वातावरण तैयार होता है। ये तत्व एक साथ मिलकर भू–भाग को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करते हैं, जो बाकी भू–भागों से अलग हो। अब हम पृथ्वी के अलग–अलग पर्यावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

1. उच्च भूमि

आपने पहाड़ो के बारे मे तो सुना होगा–ऊँची–ऊँची चोटियाँ और गहरी खाइयाँ। यहाँ वातावरण ज्यादा गरम नहीं होता। ज्यादा ऊँचाई पर अगर हम जाये तो हम बर्फ भी देख सकते हैं। क्या आपने सोचा है ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है, क्योंकि जैसे–जैसे हम ऊँचाई की तरफ बढते जाते हैं, तापमान गिरता जाता है, अर्थात मौसम ठण्डा होता जाता है।

हमारी अधिकांश नदियाँ इन्हीं ऊँची जगहों से निकलती हैं। इन पहाड़ों का ढलान तीव्र होता है और नदियाँ बड़ी तेज बहती है। कहीं-कहीं तो ढलान इतना सीधा होता है कि ये झरने के रूप मे नीचे गिरती हैं। यहाँ ज्यादा समतल जमीन नहीं है। इसलिए आप बडे– बड़े खेत नहीं देख सकते। जहाँ ढाल कम तीव्र होता है, वहीं लोग अपना घर बनाते हैं। अगर खेती होती भी हो तो इन्हीं कम ढलानों को काटकर सीढ़ीनुमा खेतों में की जाती है। यहाँ ज्यादा फसलें नहीं होती – ज्यादातर सब्जियाँ पैदा होती है और चाय या फलों के बागान है। ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक ठंड के कारण कृषि कार्य की संभावनाएँ कम ही उपलब्ध होती है। अतः कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में यहाँ के निवासी वन एवं पशुपालन से सम्बन्धित कार्य करते हैं। उत्तरी भारत में हिमालय पर्वत, दक्षिणी भारत में नीलगिरी और अन्नामलाई की पहाडियाँ, उत्तर–पूर्वी भारत के पहाड़ी इलाके ऐसे पर्यावरण के उदाहरण हैं।

हिमालय के ढालों पर सीढ़ीनुमा खेत

हिमालय की बर्फीली चोटियाँ

2. निम्न भूमि

ऐसा भू–भाग जिसकी ऊँचाई कम होती है उसे निम्न भूमि कहा जाता है, जो अधिकांशतः समतल मैदान होते हैं। यहाँ चौड़ी नदियाँ मिलती हैं जो मध्यम गति से बहती है। यहीं बड़े–बड़े लहलहाते खेत भी होते हैं। क्या आप जानते हैं कि यहाँ इतने अधिक खेत क्यों होते हैं? यह इसलिए क्योंकि मैदान की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। अब आप सोचेंगे मैदानों की भूमि इतनी उपजाऊ क्यों होती है? यह इसलिए है क्योंकि जब नदियाँ पहाड़ों से बहकर नीचे आती है तो अपनी तीव्रता के कारण अपने साथ मिट्टी बहाकर लाती है और मैदानों मे जमा कर देती है। पहाड़ों से उतरती हुई नदियाँ ही धीरे–धीरे मिट्टी का जमाव कर समतल मैदानों का निर्माण करती है। उपजाऊ मिट्टी के कारण यहाँ का जन–जीवन कृषि पर आश्रित होता है। यहाँ जनसंख्या सघन होती है। इसका उदाहरण हमारे देश में गंगा–यमुना के मैदान हैं।

3. आर्द्र तथा शुष्क प्रदेश

धरातलीय विभिन्नताओं के कारण हमारे पर्यावरण में विभिन्नता देखने को मिलती है। जलवायु भी पृथ्वी के पर्यावरण को विविध बनाती है। जैसे कि ऐसे स्थान जहाँ खूब वर्षा होती है और घने जंगल होते हैं, वहाँ तरह–तरह के पेड़–पौधे, जीव–जंतु पाये जाते हैं, जैसे अमेजन के वर्षा वन। यहाँ जलवायु में उमस होती है। कुछ स्थान दलदली भी होते हैं। उसी प्रकार ऐसे स्थान भी है जहाँ वर्षा कम होती है और मौसम भी अत्यंत शुष्क होता है। यहाँ सदावाहिनी नदियाँ नहीं बहती और वनस्पति साल भर हरी–भरी नहीं रहती। सामान्यतः इन्हें मरुस्थलीय क्षेत्र भी कहा जाता है।

आर्द्र क्षेत्र

शुष्क क्षेत्र

4. वन प्रदेश

वन क्षेत्र

किसी विशेष भौगोलिक परिवेश में पाए जाने वाले पेंड़–पौधें, झाड़ियों एवं घासों को सम्मिलित रूप से वहाँ की वनस्पति कहा जाता है, जबकि पेंड़–पौधों एवं झाड़ियों से ढके हुए विस्तृत भू–भाग को वन क्षेत्र कहा जाता है। कभी आपने वन क्षेत्र देखे हैं? वन क्षेत्रों में क्या होता है? पेड़ों के झुरमुट, जानवर, कीट पतंगे आदि। वन सिर्फ एक तरह के नहीं होते हैं। अलग–अलग जलवायु में अलग–अलग प्रकार के वन पाये जाते हैं। कही घने सदाबहार वन है तो कही ऐसे भी वन हैं जहाँ पतझड़ में

पत्ते झड़ जाते हैं। अब ऐसा भी नही है कि यहाँ सिर्फ जानवर रहते हैं। यहाँ पर कई मानव समूह भी रहते हैं। इन्हें जनजाति कहा जाता है। पर यह बहुत दुख का विषय है कि हम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इन जंगलों को काटते जा रहे हैं। हम भूल गए हैं कि ये जंगल न सिर्फ हमारी हवा से कार्बन–डाईऑक्साइड को सोख कर वातावरण को साफ रखते हैं, बल्कि ये इन आदिवासी जनजातियों के आवास भी है। भूमध्यरेखीय अफ्रीका, दक्षिण–पूर्वी एशिया और दक्षिणी अमेरिका में वनीय क्षेत्र आज भी कायम हैं।

आओ करके देखें :

अपने आस–पास में पाए जाने वाले वृक्षों की सूची बनाइए और उनसे हमें क्या–क्या लाभ हैं? लिखिए ।

5. घास के मैदान

पृथ्वी पर ऐसे स्थान भी है जहाँ वर्षा तो इतनी अधिक नहीं होती कि घने वन पनप सके पर इतनी कम भी नहीं कि वहाँ सूखे मरुस्थल हों। ऐसे स्थानों पर दूर–दूर तक घास ही घास नजर आती है। कहीं–कहीं ये हमारे घुटनों तक तो कहीं ये सिर्फ एड़ियों तक ऊँची होती है। इन फैले घास के मैदानों को चारागाहों के रूप में उपयोग मे लाया जाता है। चारागाह ऐसे स्थान हैं जहाँ भेड़, बकरियाँ, गायें आदि पशु चराए जाते हैं। ये विस्तृत चारागाह और घास के मैदान अधिकांश शीतोष्ण कटिबंधीय भू-भागों में पाये जाते हैं, जैसे–उत्तरी अमेरीका में प्रेयरी (*Prairies*)। प्रेयरी में ऊँची–ऊँची घास होती है। यूरोप एवं एशिया के स्टेपी (Steppes) मैदानों में छोटी घास पाई जाती है।

6. मरु प्रदेश

आपको पता है राजस्थान को 'धरती धोरा री' भी कहते हैं। अर्थात् रेतीला मैदान जहाँ वर्षा इतनी कम होती है कि वर्षा के भरोसे तो खेती की ही नहीं जा सकती है। यहाँ हरी-भरी वनस्पति तो नहीं है मगर रोहिड़ा और खेजड़ी के पेड़ जरुर है। इन पेड़ों को ज्यादा पानी की जरुरत नहीं होती। आपने कभी सोचा है कि हमारे थार में जो छोटी–छोटी झाड़ियाँ हैं, पौधे हैं उनमें इतने काँटे क्यों होते हैं? ये काँटे नहीं हैं पर एक प्रक्रिया है जहाँ पानी की कमी के कारण पत्ते अपने आपको पर्यावरण के अनुरुप ढाल देते हैं। यहाँ खेती की संभावना कम ही है इसलिए यहाँ के निवासी अपना जीविकोपार्जन पशुपालन से करते हैं। हर मरुस्थल थार

ऊँट

मरूस्थल में रेतीली मिट्टी

की तरह नहीं होता। थार एक गरम मरुस्थल है। मगर पृथ्वी पर ऐसे मरुस्थल भी है जहाँ बहुत ठण्ड होती है और वहाँ बर्फ जमी रहती है जैसे लद्दाख। यहाँ भी लोग पशुपालन ही करते हैं पर यहाँ गाय और भैंस नहीं होती, बल्कि याक होता है। इसके लम्बे बाल उसे ठण्ड से बचाते हैं।

7. ध्रुवीय प्रदेश

ग्लोब के दोनों छोरों को ध्रुव कहते हैं जो 90° अक्षांश पर स्थित है। उत्तरी ध्रुव पर आर्कटिक सागर है तथा दक्षिण में अंटार्कटिका महाद्वीप है। यह दोनों अंचल सूर्य ताप की कमी के कारण सदैव बर्फ से ढके रहते हैं। इस कारण यहाँ पर वनस्पति का अभाव रहता है। इन कठिन परिस्थितियों में भी यहाँ लोग रहते हैं, जिन्हें ऐस्किमो के नाम से जाना जाता है। पता है ये बर्फ के बनाए छोटे–छोटे घरों में रहते हैं जो अन्दर से गर्म रहते हैं। इन्हें 'इग्लु' के नाम से जाना जाता है। यहाँ लोग मछली पकड़ते हैं। यहाँ सील, वालरस और ध्रुवीय भालू पाये जाते हैं।

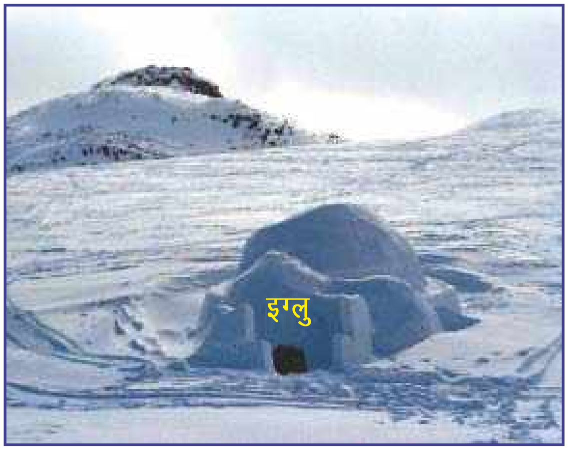

बर्फ का घर 'इग्लु'

बर्फ से ढके वृक्ष

आपने देखा की प्रत्येक स्थान के अपने विशिष्ट लक्षण हैं जो पर्यावरणीय प्रदेश बनाते हैं। हर स्थान पर भिन्न–भिन्न वन्यजीव और वनस्पति हैं। आज विश्व में हो रहे प्रदूषण और वनों का ह्रास हमारी प्राकृतिक धरोहार को नष्ट कर रहे हैं जिसके कारण दुनिया के कई प्रदेश पर्यावरणीय तनाव (Environmental stress) से लगातार ग्रसित हैं। वहाँ के निवासी अपनी आजीविका के साधनों से वंचित हो रहे हैं। हमें सदैव प्रयत्न करना चाहिये कि हम हमारे पर्यावरण की रक्षा करें ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इनका लाभ उठा सकें।

आओ करके देखें :

1 अध्याय में बताये गए पर्यावरणों में से आप किस पर्यावरणीय परिवेश में आते हैं? पता लगाइए।

2 हमारे आसपास के पर्यावरण का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पडता है? चर्चा कीजिए।

3 मनुष्य वनों की कटाई क्यों करता है? वनों की अंधाधुन्ध कटाई से हमारे पर्यावरण में क्या–क्या परिवर्तन हो सकते हैं? चर्चा कीजिए।

शब्दावली (Glossary)

कटिबन्ध	–	दो अक्षांशों के बीच विशेष परिस्थितियों का क्षेत्र।
स्टेपी	–	यूरोप एवं एशिया के शीतोष्ण घास के मैदान।
धोरे	–	रेत के टीले।
एस्किमो	–	उत्तरी ध्रुवीय प्रदेशों में रहने वाले लोग।
इग्लू	–	ऐस्किमो लोगों का बर्फ का घर।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए –

(I) प्रेयरी घास के मैदान कहाँ पाए जाते हैं ?

(क) यूरोप (ख) एशिया

(ग) उत्तरी अमेरिका (घ) आस्ट्रेलिया ( )

(ii) पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव पर स्थित है –

(क) आर्कटिक महासागर (ख) अंटार्कटिका

(ग) अटलांटिक (घ) आस्ट्रेलिया ( )

2. नीचे दिए गए कटिबंधों को उनकी अक्षांशीय स्थिति के आधार पर सुमेलित कीजिए –

कटिबंध		अक्षांशीय स्थिति
(i) उष्ण कटिबंध	–	$66\frac{1}{2}^0$ से 90^0 उत्तर और दक्षिण अक्षांश
(ii) शीत कटिबंध	–	$23\frac{1}{2}^0$ से $66\frac{1}{2}^0$ उत्तर और दक्षिण अक्षांश
(iii) शीतोष्ण कटिबंध	–	0^0 से $23\frac{1}{2}^0$ उत्तर और दक्षिण अक्षांश

3. वन क्षेत्र एवं घास के मैदानों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
4. पृथ्वी को कितने कटिबंधों में बाँटा जाता है? उनकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
5. ऊष्ण कटिबंधीय और शीत कटिबंधीय क्षेत्रों के पर्यावरणों में क्या अंतर हैं?
6. मरुस्थल कितने प्रकार के होते हैं? उनकी तुलना कीजिए।
7. राजस्थान को 'धरती धोरा री' क्यों कहा जाता है?
8. मरुस्थलीय प्रदेशों में पाई जाने वाली वनस्पति को उदाहरण देकर समझाइए।

अध्याय 8

हमारा सामाजिक परिवेश

राहुल और आशीष दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं। एक दिन छुट्टी के बाद वे विद्यालय से घर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि कमर झुकाए और सिर पर पोटली रखे एक वृद्ध सड़क पार करने की कोशिश कर रहा था। वह बार–बार अपने कदमों को आगे बढ़ाता, परन्तु वाहनों की रेलम–पेल के बीच उसे लड़खड़ाते हुए वापस लौट आना पड़ता। वे दोनों लड़के जब उसके पास से गुजर रहे थे, तो राहुल ने उसका मजाक बनाते हुए कहा –''अरे! मरेगा क्या ? इधर ही खड़ा रह।'' परन्तु आशीष ने विनम्रता से कहा– ''बाबा ! मैं आपको सड़क पार करवाता हूँ।''आशीष ने वृद्ध को सड़क पार करवा दी।

वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार करने में मदद करता बालक

आशीष को सेवा व एक–दूसरे की मदद करने की यह शिक्षा उसे अपने परिवार से प्राप्त हुई थी।

परिवार

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। हम में से हर कोई एक परिवार में पैदा हुआ है। बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार ही होता है। जहाँ उसमें स्नेह, दया, सहयोग, सहकार, क्षमा आदि गुणों का विकास होता है। बड़ों का आदर करना, अतिथियों का सत्कार करना तथा सभी के साथ मिल–जुल कर रहना बालक परिवार में रहकर सीखता है। व्यक्ति समाज की परम्पराएँ व संस्कार भी परिवार में रहकर सीखता है। समाज में मिलजुल कर रहने की शिक्षा बालक को परिवार से मिलती है। परिवार हमारे जीवन का अभिन्न अंग है।

आप अपने घर में अपने माता–पिता और भाई–बहनों के साथ रहते हो। यह आपका परिवार है। इस प्रकार का परिवार 'एकल परिवार' कहलाता है। एकल परिवार का अर्थ है–विवाहित युगल और उनके बच्चे। हो सकता है आपके दादा–दादी, ताऊ–ताई, चाचा–चाची, बुआ आदि भी आपके साथ रहते हों। ऐसा परिवार जिसमें उक्त सभी एक साथ रहते हैं, वह 'संयुक्त परिवार' कहलाता है।

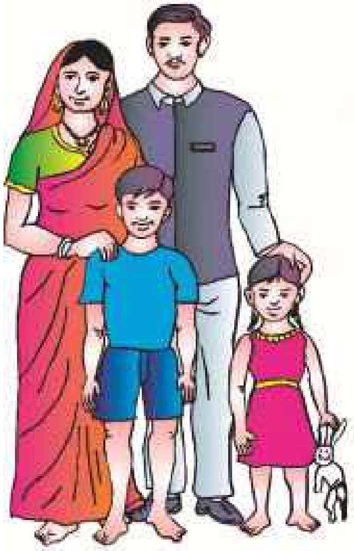

एकल परिवार

संयुक्त परिवार

परिवार में सभी सदस्य मिलजुल कर रहते हैं और सभी अपनी–अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। घर के सभी सदस्य मिलजुल कर घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी निभाते हैं। आप भी घरेलू कार्यों में अपने परिवार का सहयोग करते होंगे। परिवार के युवा व बड़े सदस्य आर्थिक साधन जुटाने की जिम्मेदारी भी उठाते हैं।ये लोग खेती, नौकरी या व्यापार आदि विभिन्न कार्यों में संलग्न रहते हैं। वर्तमान समय में महिलाएँ पुरूषों के समान नौकरी, व्यापार आदि कार्यों में बराबरी से अपनी भूमिका निभा रही हैं। हो सकता है कि आपकी माँ घर से बाहर काम करती हों, या घर पर रह कर ही आर्थिक सहयोग का कोई काम करती हो। हम देखते हैं कि गाँवों में स्त्रियाँ घरेलू कार्यों के साथ–साथ ही पुरुषों के साथ कृषि एवं पशुपालन का कार्य भी करती हैं। परिवार के बच्चे भी इन कामों में बड़ों की सहायता करते हैं। इस प्रकार घर के सभी सदस्य अपनी क्षमता अनुसार सहयोग करते हैं।

गतिविधि :

आप अपने परिवार में कौन–कौन से कार्य करते हैं ? उनकी एक सूची बनाइए।

भारत में सामान्यतः संयुक्त परिवार प्रथा का ज्यादा प्रचलन रहा है। बदलते सामाजिक परिवेश में संयुक्त परिवारों का स्थान एकल व छोटे परिवार लेते जा रहे हैं। वर्तमान समय में यह देखा जाता है कि शिक्षा, रोजगार एवं बेहतरीन जीवन की तलाश में व्यक्ति अपने माता–पिता और दादा–दादी से अलग होकर अन्य स्थानों की ओर पलायन करते हैं। इस कारण से संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं।

संयुक्त परिवार का अपना अलग ही महत्त्व होता हैं। बच्चे घर में माता–पिता एवं दादा–दादी के

व्यवहार को देखकर बडों का आदर करना और छोटों को स्नेह करना सीखते हैं। घर के बड़े बुजुर्गों के पास जीवन का अनुभव होता है, जिनका लाभ अन्य सदस्यों को मिलता है। जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान में ये अनुभव बहुत काम आते हैं। दादी–नानी का प्यार और उनकी कहानियाँ तो जीवन भर याद आती हैं। बड़ों के संरक्षण में परिवार के सभी सदस्य निश्चिन्त और आनन्दित रहते हैं।

बच्चों ! हमें बड़े बुजुर्गों का आदर करना चाहिए और उनके अनुभवों से लाभ उठाना चाहिए।

परिवार में पारस्परिक निर्भरता

परिवार के सदस्य सुख–दुख और परेशानी में एक–दूसरे के काम आते हैं। बच्चों की किलकारियाँ, बाल सुलभ चेष्टाएँ और जिज्ञासाएँ परिवार को आनन्द देती हैं। कुछ बड़े होने पर बच्चे बड़ों के कार्यों में सहयोग देते हैं। भाग–दौड़ के ऐसे काम जिनसे बड़े थक जाते हैं, उन्हें बच्चे खेल–खेल में ही पूरे कर देते हैं। हम देखते हैं कि परिवार के सभी सदस्यों का स्वभाव और रूचि अलग–अलग होते हुए भी वे एक साथ रहते हैं।

गतिविधि :

आप अपने परिवार के निम्नलिखित सदस्यों पर किस प्रकार निर्भर हैं ? चर्चा करके इस तालिका को पूरा कीजिए :–

क्र.स.	परिवार के सदस्य	वे कार्य जिनके लिए आप इन पर निर्भर हैं
1	माता	
2	पिता	
3	भाई	
4	बहिन	
5	दादा	
6	दादी	

हमारे पड़ोसी

राम और मोहन के परिवार सीतापुर नाम के गाँव में रहते हैं। दोनों परिवार एक दूसरे के पड़ोसी हैं। राम का परिवार गरीब है, तो मोहन का परिवार कुछ सम्पन्न है। उसके खेत बड़े हैं और उसके पास एक ट्रेक्टर भी है। डॉक्टर उस गाँव से आठ किलोमीटर दूर बदलापुर गाँव में ही उपलब्ध है। एक दिन आधी रात के लगभग राम के बेटे के पेट में अचानक दर्द हुआ। जब पड़ोसी मोहन को इस बात की जानकारी हुई, तो वह उस लड़के को अपने ट्रेक्टर से बदलापुर में डॉक्टर के पास ले गया।

बच्चो ! परिवार के सदस्यों के बाद हमारे सबसे निकट हमारे पड़ोसी होते हैं। अच्छे पड़ोसी मिल–जुल कर रहते हैं और सुख–दुख में एक दूसरे के काम आते हैं। आनन्द के अवसर पर पड़ोसी मिलकर आनन्द को बढ़ाते हैं। दुखः–दर्द का समय भी पड़ोसियों के सहयोग से आसानी से गुजर जाता है। अतः छोटी–छोटी बातों पर ध्यान न देते हुए सभी पडोसियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने चाहिये।

जहाँ परिवार सामाजिक जीवन की प्रथम पाठशाला है, वहीं कुछ बड़ा होने पर बालक विद्यालय जाने लगता है। विद्यालय में प्रधानाध्यापक, अध्यापक तथा अन्य कर्मचारी होते हैं। इन सभी के सहयोग से वह विद्यालय में पढ़ाई का काम व्यवस्थित तरीके से करता है।

सोचिए ! यदि विद्यालय का सहायक कर्मचारी कमरों की सफाई न करे या समय पर घण्टी न बजाए तो आपको कितनी परेशानी होगी ? यदि आपके अध्यापक जी बीमार हो जाये और आपका पाठ्यक्रम पूरा न हो पाए तो क्या आप अच्छे अंको से उत्तीर्ण हो पाओगे ? अतः सभी का कार्य महत्त्वपूर्ण होता है। सबके आपसी सहयोग से ही विद्यालय में व्यवस्थित तरीके से पढ़ाई चल सकती है। विद्यार्थियों को भी अनुशासित रहना आवश्यक है। कक्षा के होशियार बच्चों को कमजोर सहपाठियों की सहायता करनी चाहिए।

सोचिए ! क्या होगा, यदि–

1. आपके गाँव का एकमात्र डॉक्टर लम्बे समय के लिए बाहर चला जाए ?
2. किसान को फसल काटने के लिए मजदूर न मिलें ?
3. नाई बाल काटना बंद कर दे ?
4. कुम्हार मटके बनाना बंद कर दे ?
5. व्यक्ति अकेले जीवन यापन करना शुरू कर दे ?

हमारा समाज

व्यक्ति का परिवार और पड़ोस के अलावा समाज के अन्य सदस्यों व संस्थाओं से भी बहुत काम पड़ता है। समाज में सभी व्यक्ति अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार अलग–अलग कार्य करते हैं। किसान खेती करता है। कुम्हार, लुहार, सुनार, दर्जी– ये सभी समाज के लिए आवश्यक कुछ–न–कुछ वस्तुओं का निर्माण करते हैं। कुछ लोग नौकरी करते हैं, तो कुछ व्यापार में लग जाते हैं। अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि समाज को अपनी सेवाएँ देते हैं। पुलिस, प्रशासन, न्याय आदि से जुड़े लोग समाज में शान्ति एवं व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी निभाते हैं। इन सभी लोगों के कार्यों से हमारा जीवन सुखमय बनता है। समाज के सदस्य इन कामों को एक दूसरे पर आश्रित रहकर तथा परस्पर सहयोग के द्वारा संपूर्ण समाज के कल्याण के लिए सम्पन्न करते हैं।

गतिविधि :

आपके घर अथवा विद्यालय भवन के निर्माण में किन–किन व्यवसायों से जुड़े हुए व्यक्तियों का सहयोग लिया गया है – उनकी एक सूची बनाइए।

एक ओर जहाँ गाँवों में उत्पन्न अनाज शहरों में लाया जाता है और कुछ कारखानों को कच्चा माल भी खेती से ही प्राप्त होता है, जैसे–सूती वस्त्र मिलों को कपास, चीनी मिलों को गन्ना आदि। वहीं दूसरी ओर शहरों में निर्मित विभिन्न औद्योगिक उत्पाद, जैसे–चीनी, दवाईयाँ, मशीनें आदि गाँवों में ले जाकर बेचे जाते हैं। गाँवों और शहरों का जीवन एक–दूसरे के सहयोग पर ही निर्भर है।

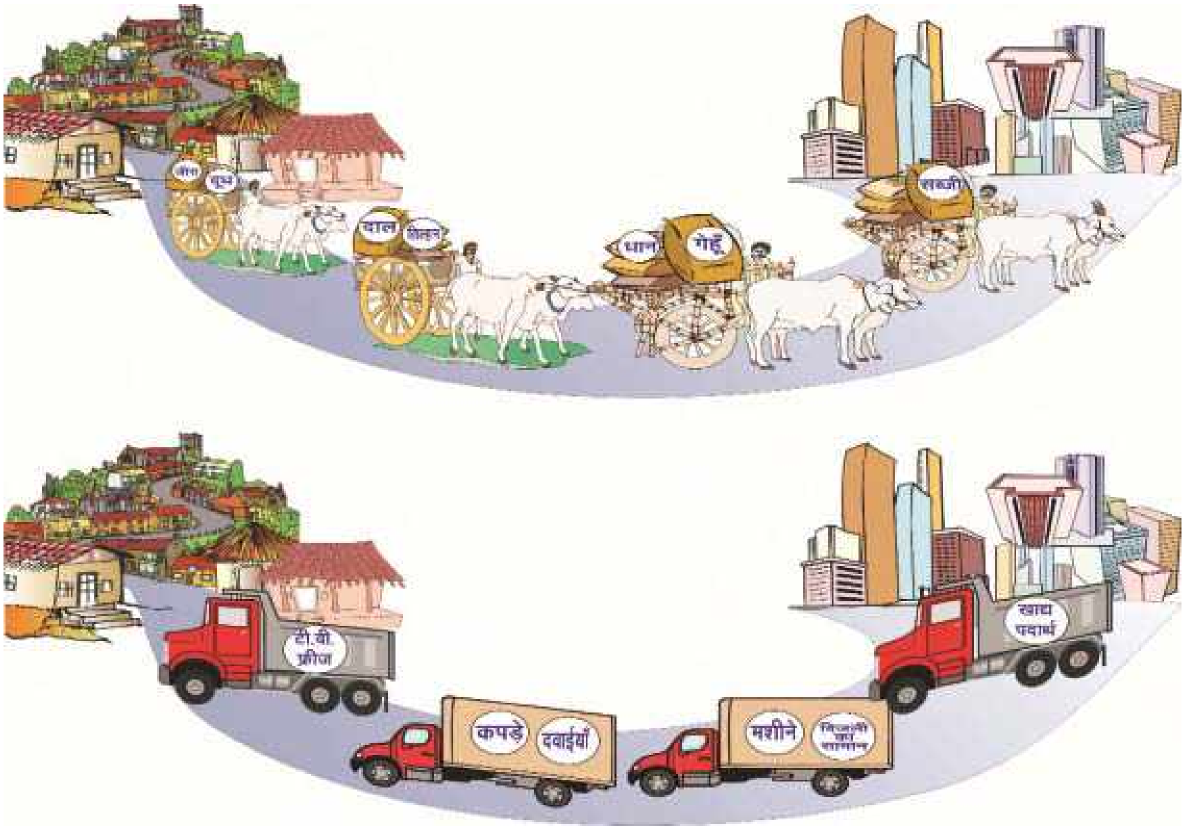

गाँव और शहर में परस्पर सहयोग

समाज हमारे शरीर की तरह होता है। जिस प्रकार हमारे शरीर के सभी अंग शरीर के लिए काम करते हैं, उसी प्रकार समाज के सभी व्यक्तियों के सहयोग से ही समाज में पूर्णता आती है और लोग सुख–शान्ति से रहकर प्रगति कर सकते हैं। हम सभी एक दूसरे के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने हमारे शरीर के लिए हमारे सभी अंग। हम अकेले सुखी नहीं हो सकते।

अब तक आप समझ गए होंगे कि हमारा जीवन परस्पर व्यक्तियों एवं समाज जैसी संस्थाओं के सहयोग पर ही निर्भर है। इन सभी में तालमेल बना रहना आवश्यक है तब ही समाज सुखी रह सकता है। अतः व्यवस्था बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। जिस प्रकार परिवार की कुछ परम्पराएँ होती हैं, ठीक वैसे ही समाज के भी कुछ नियम होते हैं। नियमों का पालन करने से ही समाज में व्यवस्था बनी रहती है।

शब्दावली

सामाजिक संस्थाएँ	:	विवाह, परिवार, जाति इत्यादि समाज द्वारा मान्य संस्थाएँ।
परिवार	:	सामान्यतः एक विवाहित युगल और उनके बच्चों से मिलकर परिवार बनता है।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए –

   (i) हमारी प्रथम पाठशाला है –

   (अ) परिवार (ब) विद्यालय (स) समाज (द) पड़ोसी ( )

   (ii) समाज की सबसे छोटी इकाई है –

   (अ) विद्यालय (ब) अस्पताल (स) परिवार (द) जाति ( )

   (iii) परिवार के सदस्यों के बाद हमारे सबसे निकट होते हैं –

   (अ) रिश्तेदार (ब) पड़ोसी (स) मित्र (द) कर्मचारी ( )

2. परिवार में रहकर व्यक्ति क्या–क्या सीखता है ?
3. एकल परिवार व संयुक्त परिवार में क्या अन्तर है ?
4. हमें घर के बड़े–बुजुर्गों से कौनसे लाभ प्राप्त होते हैं ?
5. पड़ोसियों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ?

अध्याय 9

विविधता में एकता

विविधता हमारे जीवन का प्रमुख और स्वाभाविक अंग है। हम अच्छे इंसान और नागरिक तभी बन पाएँगे, जब हम समाज की विविधता को समझेंगे और उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे। यही समझ, सम्मान के भाव एवं सहिष्णुता हमारी एकता के मार्ग को प्रशस्त करती है। इस अध्याय में हम विविधता के भिन्न–भिन्न स्वरूपों को भारतीय संदर्भ में जानेंगे और साथ ही यह भी समझेंगे कि विविधता और एकता दोनों आपस में कैसे जुड़े हुए हैं।

दुनिया में विविधता क्यों ?

हमें पता है कि हमारी धरती सब तरफ एक जैसी नहीं है। पृथ्वी पर किसी स्थान पर ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, कहीं पठार हैं, तो कहीं समतल मैदान। कहीं कल–कल करती नदियाँ है, तो कहीं सूखे रेगिस्तान। कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ बादल खूब बरसते हैं, तो किसी स्थान पर बरसात के नाम पर बादल आँख–मिचौली खेल जाते हैं। कहीं इतनी गर्मी पड़ती है कि हल्के कपड़े पहनने पड़ते हैं, तो कहीं इतनी ठण्ड होती है कि हम अगर सामान्य कपड़े ही पहनें, तो हमारी कँप–कँपी छूट जाए। आप पृथ्वी के जिस भू–भाग पर रहते हैं, वह तो इन विविध पर्यावरणों का बस एक छोटा–सा हिस्सा मात्र है।

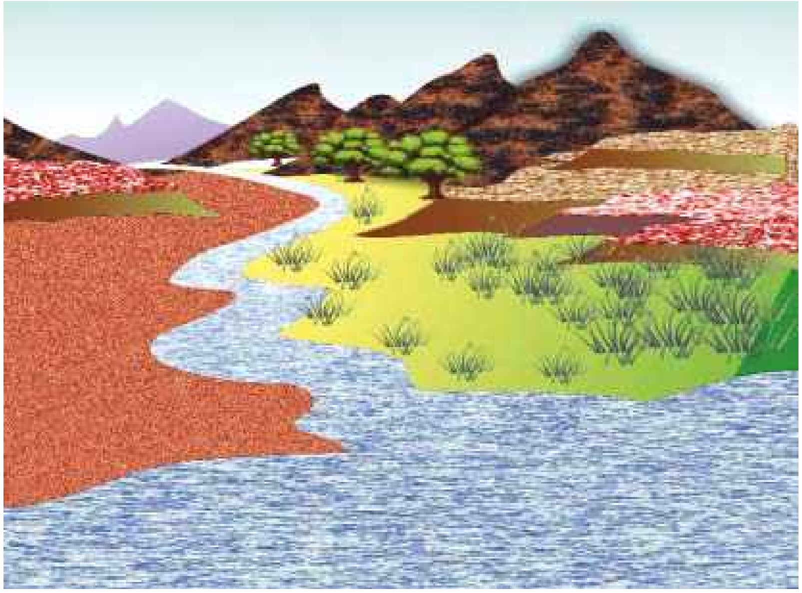
भौगोलिक विविधता

धरातलीय व जलवायु संबंधी विविधताओं के कारण पृथ्वी पर सभी जगह पेड़–पौधे और फसलें एक जैसी पैदा न होकर, अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग तरह की पैदा होती हैं। उदाहरण के लिए हमारे देश के पंजाब राज्य में गेंहूँ और चावल पैदा होते हैं, लेकिन चाय पैदा नहीं होती। चाय की पैदावार के अनुकूल स्थितियाँ देश के एक दूसरे राज्य आसाम में हैं। केरल और तमिलनाडु के समुद्र तटीय क्षेत्र में नारियल खूब पैदा होते हैं, किन्तु नारियल रेगिस्तानी राज्य राजस्थान में पैदा नहीं हो पाता। राजस्थान में बाजरा व मक्का पैदा होते हैं। लोहा, कोयला, तांबा आदि खनिज पदार्थ पृथ्वी पर न तो सभी जगह पाए जाते हैं और न ही समान मात्रा में।

इन सभी विविधताओं के विद्यमान होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों के लोगों में खान–पान, पहनावा, रहन–सहन, रोजगार–व्यवसाय आदि में भारी अन्तर आ जाता है।

अब हम हमारे देश भारत में विद्यमान विविधताओं की चर्चा करेंगे –

विविधताओं का धनी भारत देश

भारत में विविधता के कई पक्ष हैं, जैसे– नृजातीयता, भाषा, रंगरूप, शरीर की बनावट, काम करने के तरीके, पूजा–पद्धतियाँ, जाति, कला और संस्कृति आदि। देश में सैकड़ों समुदाय हैं। यहाँ सैकड़ों बोलियाँ और अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। विश्व का शायद ही कोई ऐसा बड़ा धर्म और पंथ हो जो भारत में प्रचलित नहीं हो। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी आदि अनेक धर्मों एवं पंथों को मानने वाले लोग हमारे देश में निवास करते हैं। देश के हर इलाके में वहाँ की अपनी लोककथाएँ, लोकगीत एवं नृत्य मिलते हैं, जिनका संबंध मौसम और फसल बोने या काटने के अवसरों के साथ जुड़ा हुआ है। असम में बीहू, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल, राजस्थान में गणगौर और तीज, बिहार में छठपूजा, पंजाब में बैसाखी आदि त्योहार मनाए जाते हैं। हर धर्म के अपने–अपने त्योहार हैं। भारत में दीपावली, होली, दुर्गापूजा, महावीर जंयती, ईद, क्रिसमस, गुरुनानक–जयंती, नवरात्रि आदि त्योहार बड़े धूमधाम से मनाये जाते हैं।

पहनावे की विविधता

सांस्कृतिक विविधता

गतिविधि :

10 रुपये के नोट पर कुल कितनी भाषाएँ अंकित हैं– उन भाषाओं के नाम तथा वे जहाँ बोली जाती हैं, उन राज्यों की सूची बनाइए।

भारतीय उप महाद्वीप की भौगोलिक विविधता व उसकी एकता

देश की भौगोलिक विविधताओं को देखें तो उत्तर में हिमालय के ऊँचे पहाड़ और गंगा–यमुना का उपजाऊ मैदान है, दक्षिण में पठार और समुद्र हैं, तो पश्चिम में रेगिस्तान है। भारत में कुछ भाग ऐसे हैं, जहाँ बारह महिनों बर्फ जमी रहती है। देश में गर्मी, सर्दी और बरसात के अलग–अलग मौसम होते हैं। भारत के अलग–अलग भागों में खान–पान भी अलग–अलग हैं। उदाहरण के लिए दक्षिण में इड़ली–ड़ोसा, राजस्थान में दाल–बाटी–चूरमा, गुजरात में ढोकला–खमण, पंजाब में मक्की की रोटी और सरसों का साग और बिहार में लिट्टी चोखा प्रचलित हैं। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के वस्त्रों और पहनावे की शैली में भी अन्तर है।

अब हम उन कारकों की चर्चा करेंगे जो भारत में विविधता में एकता को स्थापित करते हैं–

भारत की राष्ट्रीय एकता के कारक

विविधता ने हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को समृद्ध ही किया है। 'विविधता में एकता' हमारे देश की विशेषता है, जिसकी सराहना पूरी दुनिया में की जाती है। भारत में ऐसे अनेक कारक हैं, जो हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरो कर रखते हैं।

1. भौगोलिक बनावट :– सबसे पहले तो भारत की भौगोलिक बनावट इसे एकीकृत रखती है। उत्तर और उत्तर–पूर्व में हिमालय पर्वत, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिन्द महासागर हमें एक खास पहचान देते हैं। देश के अन्दर लम्बी नदियाँ एक भाग को दूसरे भाग से जोड़ती हैं।

2. हमारा स्वतंत्रता संग्राम :– ऐतिहासिक रूप से अनेक चक्रवर्ती राजाओं और बादशाहों ने देश को एकता के सूत्र में बाँधकर रखा था। जब अंग्रेजों का भारत पर राज था तो भारत के सभी धर्म, भाषा और क्षेत्र की महिलाओं और पुरुषों ने अंग्रेजों के खिलाफ एकजुट होकर लड़ाई लड़ी थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उभरे गीत और चिह्न विविधता के प्रति हमारा विश्वास बनाए रखते हैं।

3. हमारा संविधान :– संपूर्ण भारत के लिए एक ही संविधान है। पूरे देश के लिए समान नियम–कानून और एक ही नागरिकता है। हमारा संविधान राष्ट्रीय एकता को बढ़ाता है। हमारे राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न राष्ट्र–गान और राष्ट्र–गीत भी देश को एकता के सूत्र में पिरोते हैं।

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

1. राष्ट्रीय ध्वज : तिरंगा
2. राष्ट्रीय चिह्न : अशोक स्तम्भ
3. राष्ट्रीय पशु : बाघ
4. राष्ट्रीय पक्षी : मोर
5. राष्ट्रीय पुष्प : कमल
6. राष्ट्रीय खेल : हॉकी
7. राष्ट्र–गान : जन–गण–मन
8. राष्ट्र–गीत : वंदे मातरम्

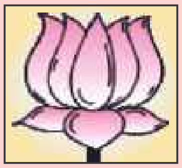

गतिविधि :
भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों के चित्र बनाकर कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित कीजिए।

भारतीय मुद्रा : रुपया

4. सांस्कृतिक एकता :– हमारे देश में सांस्कृतिक दृष्टि से सभी लोग भावनाओं के आधार पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमने सांस्कृतिक विविधता को अपना लिया है। अपने क्षेत्र के खान–पान, नृत्य–गीत, त्योंहार, वस्त्र–आभूषण आदि के साथ–साथ हमने दूसरे क्षेत्रों की भी इन्हीं विशेषताओं को अपना लिया है। सब साथ मिलकर चलते हैं। एक धर्म के त्योहार को मनाने में दूसरे धर्म के लोग उत्साह से सम्मिलित होते हैं।

5. क्षेत्रीय अंतः निर्भरता :– देश का हर क्षेत्र अपने यहाँ उत्पन्न वस्तु से देश के दूसरे क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है एवं अनेक आवश्यकताओं के लिए स्वयं भी अन्य क्षेत्रों पर निर्भर है। हमारे बाजार, कल–कारखाने, संचार, परिवहन और यातायत के साधन हमारी आवश्यकताओं को अन्तर्निर्भरता में परिवर्तित करते हैं।

इस प्रकार विविधता ने भारत को दुनिया में विविध फूलों वाले एक सुन्दर और अनोखे गुलदस्ते के रूप में सजा रखा है।

बच्चो ! अब हम भारत के ग्रामीण एवं शहरी जीवन की चर्चा करेंगे–

ग्रामीण एवं शहरी जीवन

ग्रामीण एवं शहरी जीवन में बहुत–सा अन्तर विद्यमान है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्र की बात करें तो यहाँ पड़ोस के लोगों में परस्पर घनिष्ठता अधिक होती है और वे एक–दूसरे के सुख–दुख में अधिक निकटता से सम्मिलित होते हैं। गाँवों में खुलापन और हरियाली होती है। दूसरी ओर गाँवों में बिजली, पानी, शिक्षा,

ग्रामीण जीवन

चिकित्सा, यातायात, मनोरंजन आदि की सुविधाएँ शहरों जैसी नहीं हैं। गाँवों में अधिकांश लोग खेती, पशुपालन और उनसे जुड़े हुए काम–धंधे करते हैं। आजकल अनेक कारणों से अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान कम होता जा रहा है। इस मशीनी युग ने गाँवों के परम्परागत कुटीर उद्योगों को समाप्त कर दिया है। यहाँ बेरोजगारी शहरों से ज्यादा होने के कारण लोग रोजगार एवं बेहतर जीवन के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं। शहरी लोगों का जीवन ग्रामीण जीवन से अलग होता है।

शहरों के लोग अधिक व्यस्त रहते हैं। शहरी जीवन भाग–दौड़ भरा होता है। यहाँ ऊँची–ऊँची इमारतों का जाल और वाहनों की रेलम–पेल रहती है। यहाँ हरियाली और खुलापन बहुत कम रहता है। वाहनों और कारखानों से निकले धुआँ से हवा और वातावरण प्रदूषित रहता है। दूसरी ओर शहरों में रोजगार के बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें योग्यता हासिल करके आगे बढ़ा जा सकता है। यहाँ शिक्षा प्राप्त लोगों को रोजगार मिलने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। यही कारण है कि लोग ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करके शहरों में बसते जा रहे हैं।

शहरी जीवन

कच्ची बस्तियाँ व बहुमंजिला भवन

बढ़ती जनसंख्या ने शहरों को समस्याग्रस्त कर दिया है। शहरों में आकर बसने वाले सभी लोगों को पर्याप्त रोजगार व आवश्यक मूलभूत सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं। अधिकांश लोगों को कम आय में अपना जीवन गुजारना पड़ता है। उन्हें कच्चे और छोटे घरों वाली ऐसी बस्तियों में रहना पड़ता है, जहाँ बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा आदि की मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है। इन बस्तियों में चारों ओर गन्दगी होती है। बहुत से लोगों को फुटपाथ पर ही अपना जीवन गुजारना पड़ता है। यहाँ भीड़ में रहकर भी व्यक्ति स्वयं को अकेला अनुभव करता है।

गतिविधि :

अपने गाँव / मोहल्ले में प्राप्त नागरिक सुविधाओं की सूची बनाइए।

शब्दावली

विविधता : कई तरह का होने का भाव जैसे खान–पान, वेश–भूषा, रंग– रूप आदि में अन्तर

नृजातीयता : मनुष्य की प्रजाति आर्य, द्रविड़ आदि सम्बन्धी

भौगोलिक : पृथ्वी के प्राकृतिक स्वरूप संबंधी

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   (i) भारत के उत्तर में .... पर्वत और .... के उपजाऊ मैदान हैं।

   (ii) गाँवों में अधिकांश लोग .... और .... से जुड़े हुए काम–धंधे करते हैं।

2. स्तम्भ 'अ' को स्तम्भ 'ब' से सुमेलित कीजिए –

(अ)

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(I)	राष्ट्रीय ध्वज	मोर
(ii)	राष्ट्रीय चिह्न	बाघ
(iii)	राष्ट्रीय पशु	तिरंगा
(iv)	राष्ट्रीय पक्षी	अशोक स्तम्भ

(ब)

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(I)	राष्ट्रीय खेल	जन–गण–मन
(ii)	राष्ट्र–गान	कमल का फूल
(iii)	राष्ट्र–गीत	हॉकी
(iv)	राष्ट्रीय पुष्प	वंदे मातरम्

(स)

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
(I)	इडली–डोसा	राजस्थान
(ii)	दाल–बाटी–चूरमा	गुजरात
(iii)	ढोकला–खमण	दक्षिणी भारत
(iv)	मक्की की रोटी और सरसों का साग	बिहार
(v)	लिट्टी चोखा	पंजाब

3. भारत में विविधता के कौन–कौन से पक्ष हैं ?
4. भारत की राष्ट्रीय एकता के कारक कौन–कौन से हैं ?
5. ग्रामीण व शहरी जीवन में क्या अन्तर हैं ?
6. गाँव से शहरों की ओर पलायन रोकने हेतु कोई तीन उपाय बताइए।

अध्याय 10

हमारे बाजार

एक अकेला व्यक्ति अपने जीवन की समस्त आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर सकता। सभ्यता के प्रारम्भ से ही मनुष्य एक दूसरे पर निर्भर रहा है, हालाँकि इसके स्वरूप में परिवर्तन एवं विस्तार होता रहा है। प्रारम्भ में मनुष्य की आवश्यकताएँ बहुत कम थीं। वह अपने आस–पास के लोगों से ही अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर लेता था। वह दूसरों को उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ देता था और बदले में अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त कर लेता था, जैसे कि किसान अपने खेत में पैदा अनाज के बदले अपनी आवश्यकता का सामान प्राप्त करता था। वह अनाज के बदले में जुलाहे से कपड़ा, लुहार से औजार तथा कुम्हार से बर्तन प्राप्त करता था। इस प्रकार वस्तु के बदले वस्तु देकर एक दूसरे की आवश्यकताएँ पूरी की जाती थीं। यह प्रणाली 'वस्तु–विनिमय' कहलाती है। एक ही स्थान पर रहने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं को इसी प्रकार से पूरा करते थे।

वस्तु विनिमय

समय गुजरने के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ने लगीं और उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई–नई वस्तुओं का निर्माण होने लगा। वस्तुओं के निर्माण की नई–नई विधियाँ खोजी गईं और जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ बड़ी मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन किया जाने लगा। कृषि एवं परम्परागत वस्तुओं के उत्पादन के साथ–साथ लघु व कुटीर उद्योगों में आवश्यकता की अनेक वस्तुओं का उत्पादन होने लगा। अब वस्तु के बदले वस्तु देने की प्रणाली के द्वारा लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाईयाँ आने लगीं। धीरे–धीरे लेन–देन की एक नई प्रणाली विकसित हुई। मुद्रा के विकास के साथ ही मुद्रा के बदले वस्तुओं के लेने–देने की सुविधापूर्ण प्रणाली प्रचलित हुई। जब वस्तु के मूल्य के रूप में वस्तु न दी जाकर मुद्रा दी जाती है, तो इसे 'मुद्रा–विनिमय' कहते हैं।

मुद्रा–विनिमय

आधुनिक युग मशीनों का युग है। बड़े–बड़े कारखानों में लगे मजदूर हमारी आवश्यकता की हजारों तरह की वस्तुएँ तैयार करते हैं। आज व्यक्ति केवल अपने गाँव, शहर या देश की ही नहीं बल्कि विदेशों में बनी वस्तुओं का भी उपयोग करने लगा है। यह वस्तु–विनिमय प्रणाली में सम्भव नहीं था, परन्तु मुद्रा–विनिमय प्रणाली ने इसे सम्भव बना दिया है।

गतिविधि :

आपके गाँव या शहर में कही–कहीं आज भी वस्तु विनिमय की गतिविधियाँ देखी जा सकती है। उनकी एक सूची बनाइए।

बाजार

हम बाजार जाते हैं और बाजार से अपनी आवश्यकता की बहुत–सी चीजें खरीदते हैं, जैसे– सब्जियाँ, साबुन, दंत–मंजन, मसाले, ब्रेड, बिस्किट, चावल, दाल, कपड़े, किताबें, कॉपियाँ आदि। हम जो कुछ खरीदते हैं, यदि उन सब की सूची बनाई जाए, तो वह काफी लंबी होगी। बाजार भी कई प्रकार के होते हैं, जहाँ कि हम अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं को खरीदने के लिए जाते हैं, जैसे– हमारे पड़ोस की गुमटी, मोहल्ले की दुकान, साप्ताहिक हाट (बाजार), बड़े–बड़े शॉपिंग कॉम्पलेक्स और शॉपिंग मॉल आदि।

आइए! हम बाजार के इन विभिन्न स्वरूपों की चर्चा करें–

1. मोहल्ले की दुकानें

बहुत–सी दुकानें हमारे मोहल्ले में होती हैं, जो हमें कई तरह की सेवाएँ और सामान उपलब्ध करवाती हैं। हम पास की डेयरी से दूध, किराना व्यापारी से तेल–मसाले व अन्य खाद्य पदार्थ तथा स्टेशनरी के व्यापारी से कागज–पैन या फिर दवाइयों की दुकान से दवाइयाँ खरीदते हैं। नाई की दुकान पर अपने बाल कटवाते हैं और ड्राई–क्लिनर से अपने वस्त्र धुलवाते व इस्त्री करवाते हैं। नाई व ड्राई–क्लीनर हमें अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं। इस तरह की दुकानें सामान्यतः पक्की और स्थायी होती हैं, जबकि सड़क किनारे फुटपाथ पर सब्जियों के कुछ छोटे दुकानदार, फल–विक्रेता और कुछ गाड़ी मैकेनिक आदि भी दिखाई देते हैं। ये मोहल्ले की दुकानें कई अर्थों में बहुत उपयोगी होती हैं, वे हमारे घरों के करीब होती हैं, अतः हम सप्ताह के किसी भी दिन और किसी भी समय इन दुकानों पर जा सकते हैं।

2. साप्ताहिक बाजार

साप्ताहिक बाजार का यह नाम इसीलिए पड़ा क्योंकि यह बाजार सप्ताह के किसी एक निश्चित दिन लगता है। इस तरह के बाजार में रोज खुलने वाली पक्की दुकानें नहीं होती हैं। किसी एक निश्चित स्थान पर बहुत से व्यापारी एक निश्चित दिन खुले में ही दुकाने लगाते हैं और शाम होने पर उन्हें समेट लेते हैं। अगले दिन वे अपनी दुकानें किसी और जगह लगाते हैं। ऐसे बाजारों को हाट बाजार भी कहा जाता है। साप्ताहिक बाजारों में रोजमर्रा की जरूरतों की बहुत–सी चीजें सस्ते दामों पर मिल जाती हैं। ऐसा इसलिए कि इन बाजारों में एक ही तरह के सामानों की कई दुकानें होती हैं, जिससे उनमें आपस में प्रतियोगिता होती हैं, अतः खरीदारों के पास यह

साप्ताहिक हाट बाजार

अवसर भी होता है कि वे मोल–तोल करके भाव कम करवा सकें। साथ ही इन्हें अपनी दुकानों का किराया, बिजली का बिल, सरकारी शुल्क, कर्मचारी की तनख्वाह आदि का खर्च भी नहीं करना पड़ता है। लोग अक्सर इन बाजारों में जाना पसंद करते हैं।

3. शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और मॉल

बड़े शहरों में कुछ इस प्रकार के बाजार भी होते है, जहाँ एक ही छत के नीचे अनेक वस्तुओं की अनेक दुकानें होती हैं। इन्हें लोग शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के नाम से जानते हैं। कुछ शहरी इलाकों में आपको बहुमंजिला वातानुकूलित दुकानें भी देखने को मिलेंगी, जिनकी अलग–अलग मंजिलों पर अलग–अलग तरह की वस्तुएँ मिलती हैं। इन्हें शॉपिंग मॉल कहा जाता है।

शॉपिंग मॉल

4. विशेष बाजार

शहर में कई स्थानों पर एक वस्तु विशेष के लिये विशेष बाजार भी होते हैं, जैसे– कपड़ा बाजार, लोहा बाजार, अनाज बाजार आदि। इन बाजारों में एक ही प्रकार की वस्तु की कई दुकानें होती हैं।

गतिविधि :

विभिन्न प्रकार के बाजारों की शिक्षक से जानकारी प्राप्त करके उन पर कक्षा में चर्चा करें।

क्या आपने कभी सोचा है कि आपके मोहल्ले के दुकानदार अपनी दुकानों के लिए सामान कहाँ से लेकर आते हैं?

थोक व्यापारी व फुटकर व्यापारी

वस्तुओं अथवा सामानों का उत्पादन खेतों, घरेलु उद्योगों और कारखानों में होता है, लेकिन हम ये सामान इन उत्पादकों से सामान्यतः सीधे–सीधे नहीं खरीदते हैं। वे लोग जो वस्तु के उत्पादक और वस्तु के उपभोक्ता के बीच में होते हैं, उन्हें व्यापारी कहा जाता है। व्यापारी दो प्रकार के होते हैं –

1. वे व्यापारी जो उत्पादक से बड़ी मात्रा या संख्या में सामान खरीद लेते हैं और फिर इन्हें वे छोटे व्यापरियों को बेच देते हैं, ये थोक व्यापारी कहलाते हैं। जैसे– सब्जियों का थोक व्यापारी 10–12 किलो सब्जियाँ नहीं खरीदता है, बल्कि वह बड़ी मात्रा में 300–400 किलो तक सब्जियाँ खरीद लेता है। वह इन्हें गली–मोहल्ले के छोटे सब्जी विक्रेताओं को बेच देता है। यहाँ खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों व्यापारी ही होते हैं।

2. वह व्यापारी जो अंततः वस्तुएँ हम उपभोक्ताओं को बेचता है, वह खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है। यह वही दुकानदार होता है, जो आपको पड़ोस की दुकानों, साप्ताहिक बाजार या फिर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में सामान बेचता मिलता है।

गतिविधि :

खेतों , घरेलू उद्योगों और कारखानों में बनने वाली पाँच–पाँच वस्तुओं की सूची बनाइए।

बैंकिंग प्रणाली

वर्तमान युग में बैंकिंग प्रणाली हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी है। सामान्यतः हमारे निकट में किसी बैंक की शाखा अथवा पोस्ट–ऑफिस होता है। बैंकों का मुख्य कार्य व्यक्तियों व संस्थाओं से नकद जमाएँ स्वीकार करना तथा जरूरतमंद व्यक्तियों और संस्थाओं को ऋण उपलब्ध कराना है। कोई भी व्यक्ति बैंक या पोस्ट–ऑफिस में जाकर अपना खाता खुलवा सकता है। व्यापारिक और अन्य संस्थाएँ भी अपना खाता खुलवा सकते हैं। खाते विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे– बचत खाता, चालू खाता, स्थायी जमा खाता आदि। अपनी आवश्यकता के अनुसार किसी भी प्रकार का खाता खुलवाया जा सकता है।

बैंक का दृश्य

सभी बैंक 'भारतीय रिजर्व बैंक' के निर्देशन एवं नियंत्रण में कार्य करते हैं। बैंकिंग प्रणाली ने धन के लेन–देन को आसान और सुरक्षित बना दिया है। कितनी भी बड़ी राशि का भुगतान या स्थानान्तरण चैक, बैंक–ड्राफ्ट, इंटरनेट बैंकिंग आदि का उपयोग कर के आसानी से और शीघ्रता से किया जा सकता है। हम ऑटोमेटिक टेलर मशीन (ए.टी.एम.) के द्वारा अपने खाते से धन सरलता से निकाल सकते हैं। हम अपनी बचत का धन अपने खाते में जमा करवा सकते हैं। यहाँ हमारा धन सुरक्षित रहता है, साथ ही उस पर ब्याज भी मिलता हैं। हमारी इस प्रकार की छोटी–छोटी बचतें बैंक में इकट्ठा होकर विशाल धनराशि बन जाती है। इस राशि को बैंक अपना रोजगार स्थापित करने के इच्छुक लोगों के साथ ही उद्योगों और व्यावसायिक संस्थाओं को उधार दे देता है। इस धन का उपयोग कई विकास कार्यों में किया जाता है। इस प्रकार बैंक रोजगार और उद्योग–व्यवसायों के लिए ऋण दे कर विकास कार्यों में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। एक तरफ जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी ने बैंकिंग सेवाओं को सर्व सुलभ किया है, वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग इस तकनीकी का दुरूपयोग करके बैंक खाता–धारकों को ठग लेते हैं। अतः इंटरनेट बैंकिंग एवं ए.टी.एम. मशीन का उपयोग किसी दूसरे व्यक्ति के उपस्थिति में नहीं करें। अपने पासवर्ड / पिन नम्बर किसी भी व्यक्ति को नहीं बताएँ।

ए.टी.एम. मशीन

गतिविधि :
अपने शिक्षक/अभिभावक की मदद से बैंक या पोस्ट ऑफिस में बचत खाता खुलवाने की प्रक्रिया को समझें और अपना बचत खाता खुलवाएँ।

शब्दावली

परम्परागत : परम्परा से चले आ रहे रीति–रिवाज या सिद्धान्त।
लघु–उद्योग : छोटा उद्योग जिसमें लगभग 20 आदमी तक लगे हों।
कुटीर–उद्योग : घरेलु उद्योग जो परिवार के सदस्यों के सहयोग से चलता है।
थोक व्यापारी : बड़ी मात्रा में माल खरीदने–बेचने वाला व्यापारी
फुटकर या खुदरा व्यापारी : थोड़ी मात्रा में माल खरीदने–बेचने वाला व्यापारी
व्यावसायिक : व्यवसाय से संबंधित

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प को चुनिए –
   (i) जो व्यापारी बड़ी मात्रा में सामान खरीदकर छोटे व्यापारियों को बेचते हैं, कहलाते हैं –
   (अ) थोक व्यापारी (ब) खुदरा व्यापारी
   (स) हाट व्यापारी (द) इनमें से कोई नहीं ( )
   (ii) हम अपना बचत खाता खुलवा सकते हैं –
   (अ) बैंक में (ब) पोस्ट–ऑफिस में
   (स) बैंक व पोस्ट ऑफिस दोनों में (द) इनमें से किसी में भी नहीं ( )
2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
   (i) साप्ताहिक बाजारों को .... भी कहते हैं।
   (ii) हम .... मशीन का प्रयोग करके अपने खाते से धन सरलता से निकाल सकते हैं।
   (iii) सभी बैंक.................................के निर्देशन एवं नियंत्रण में कार्य करते हैं।
3. वस्तु–विनिमय किसे कहते हैं ?
4. मुद्रा–विनिमय किसे कहते हैं ?
5. हमें अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ कौन–कौनसे बाजारों से प्राप्त होती हैं ?
6. व्यापारी मुख्य रूप से कितने प्रकार के होते हैं ?
7. हम बैंक में किस तरह के खाते खोल सकते हैं ?
8. बैंक हमारे लिए किस प्रकार से उपयोगी होते हैं ?